A Progressive emergence of Hindi language with Shrinking Grammar.

हिन्दी-भाषा के बढ़ते प्रभाव के साथ सिमटता व्याकरण.

रामबाबू गौतम 'आरजी', न्यू जर्सी.

इस बात की प्रमाणिक सत्यता को मानना पड़ेगा कि आज विश्व में हिन्दी-भाषा का विकास बोल-चाल के स्तर पर अत्याधिक बढ़ा है किन्तु वहीं पर लेखन और व्याकरण का ह्रास हुआ है। लोकोक्तियों और मुहावरों के अपने दायरे अब सीमित से होते जा रहे हैं। रस, अलंकार, पर्यायवाची, और लोक श्रृंगार का वास्तविक सवैया-छप्पय जैसे छंदों का लेखन और पठन-पाठन भी कम हुआ है। हिन्दी साहित्य का आलौकिक-काव्य अवधी, मैथिली, भोजपुरी, ब्रज और बुंदेली भाषाओं का सामान्य सामांजस नहीं हो पा रहा है। देवनागरी के उच्चारण को अंग्रेजी-भाषा के साथ विकृत किया जा रहा है। अतः भाषा का जो प्रारूप होना चाहिए था वह धीरे-२ लुप्त सा हो चला है। लिखने की अशुद्धियां आज हिन्दी के जानकार भी करने लगे हैं क्योंकि जिसे बार-बार और कई अखबार-पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलेगा उसे ही शुद्ध मान लिया जायेगा। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा को लोगों के अन्दर ठूंसा जा रहा है। वह पढ़ने-लिखने के इच्छुक नहीं रहे हैं। इन सबके लिए कई पहलू जिम्मेदार हैं। जिसके कारण हिन्दी-भाषा साहित्यिक संदर्भों से परे और निहित निम्न-स्तर की ओर बढ़ रही है —

१. जनसंख्या के साथ भाषा का प्रभाव.
२. हिन्दी-भाषा को देवों की भाषा में मान्यता.
३. मोबाइल तथा अंतर्जाल की तकनीकी में हिन्दी-भाषा.
४. ग्लोबल स्तर पर जन सम्पर्क में हिन्दी-भाषा
५. विश्व-व्योपार में हिन्दी-भाषा की भूमिका,
६. चल-चित्र सिनेमा जगत में हिन्दी-भाषा का प्रयोग.
७. हिन्दी-भाषा में लोक-साहित्य का माधुर्य.

विश्व में अंग्रेजी भाषा के तदनंतर चीन की भाषा को उसकी जनसंख्या के आधार पर द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ जिसकी पहल हिन्दी-भाषा के साथ २००७ में, संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी-भाषा को दूसरे स्थान पर लाने के लिए और दूसरे देशों के साथ

समानांतर रूप से सम्मान देने के लिए राष्ट्र-संघ को बाध्य किया गया जिसके कारण हिन्दी-भाषा आज विश्व में सम्मानित होने के साथ-2 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने लगी है। और लगभग विश्व-भर में हिन्दी-भाषा के बोलने वाले हर देश में अपनी प्रतिष्ठा कायम करने में सक्षम है।

हिन्दी-भाषा को देवालयों में, देवों की भाषा के रूप में जन-जन तक जाना गया और देव-स्तुति के साथ इसे आरती-भजनों में गायकी के साथ स्वर में गाया जो जन-2 के मन को प्रभावित करने वाली भाषा हिन्दी-भाषा जन मानस के अंदर समा गयी। इसमें भक्ति-काल (१३७५ से १७०० ई. तक) के कवि कबीरदास जी के दोहे 'बीजक' में और तुलसीदास जी द्वारा चौपाई छंद में लिखित 'रामचरित मानस' (१५७४-७७) पन्द्रहवीं शताब्दी का श्रेष्ठ ग्रंथ माना गया। इस ग्रंथ के कारण हिन्दी-भाषा का विकास विश्व में हिन्दी लोक साहित्य का प्रभाव सूरीनाम गयाना ट्रिनिदाद आदि दक्षिण अमेरिका के देशों में ब्रज, अवधी, मैथिली, उर्दू, भोजपुरी आदि हिन्दी-भाषा के लोक रंग साहित्य का प्रभाव गिरमिटिया समाज के साथ-2 आज की नई पीढ़ी के साथ भी जुड़ने में प्रभावकारी रहा। इसके साथ ही तकनीकी में मोबाइल तथा अंतर्जाल के साथ हिन्दी-भाषा को बढ़ावा मिला। साथ ही साथ इसका स्तर भी गिरा। क्योंकि हिन्दी भाषा को अंग्रेजी (रोमन लिपि) में मिलावट के साथ लिखा गया जिससे हिन्दी बोलने में तो रही किन्तु लिखने में पिछड़ गयी। और जब लिखने में पिछड़ी तो उसके व्याकरण, मुहावरे, लोकोक्तियां तथा अलंकारों की संभावनाएं खत्म सी हो गयीं। नई पीढ़ी इस हिन्दी-भाषा को बोलने तो लगी किन्तु उसके साहित्यिक परिवेश को दूर रखकर या फिर भाषा की अशुद्धियों के साथ उसका संबंध गहरा होता चला गया। जो हिन्दी साहित्य को पीछे ढकेलने में अपनी भूमिका के साथ बढ़ती गयी और बढ़ती जा रही है। अतः इसके शुद्धिकरण पर ध्यान देना आवश्यक है।

इस अंतर्जाल के कारण व्यापक रूप से एक देश के लोगों का संम्पर्क दूसरे लोगों के देश के साथ संभव हुआ। जिसमें उनके देश की भाषा, प्रांत की भाषा और संगीत का प्रभाव भी जन-समुदाय के संम्पर्क के साथ हुआ। हजारों मीलों की दूरी पर बसे हुए देश की भाषा और तकनीकी से जुड़कर विश्व व्योपार में भी जुड़ सके। व्योपार के लिए भाषा की जानकारी आवश्यक थी अतः भारत से व्योपार करने वाले भारत की भाषा के साथ जुड़े और अपने व्योपार को आगे बढ़ाने में देश की भाषा और संस्कृति को

भी एक नया आयाम देने में सफल रहे।

भारतीय सिनेमा ने अन्य भाषाओं के साथ-2 हिन्दी-भाषा और हिन्दी-साहित्यकारों को आगे लाने में बड़ी भूमिका अदा की। हिन्दी फिल्मों के कारण हिन्दी भाषा को विदेशों में भी पहिचान मिली और उन फिल्मों के हिन्दी गीतों को भी बड़ी शोहरत से गाया गया। रूस जैसे देश में अभिनेता-राजकपूर जी की फिल्में और उन फिल्मों के गीत बहुत चर्चित हुए, वहीं अरब देशों में अभिनेता-अमिताभ बच्चन की फिल्में बहुत पसंद की गयीं। उनकी फिल्मों के नाट्य-सम्वाद लोग हिन्दी-भाषा में मंचों पर सुनाने लगे और उनके साथ अभिनय भी करने लगे। फिल्म 'शोले' की बसंती और गब्बर के डायलॉग बहुत सारे लोगों ने अभिनय के साथ कला-प्रदर्शन में प्रयोग किये। वहीं पर राजकपूर जी की फिल्म 'संगम' और 'मेरा नाम जोकर' विदेशों के लोगों को एक मादकता के साथ हिन्दी-भाषा को भूमिका में जोड़ती है। इन्हीं फिल्मों में क्षेत्रीय भाषाओं के लोकगीतों- ब्रज, अवधी, मैथिली, उर्दू, भोजपुरी, तथा बुंदेली भाषाओं को भी एक स्थान मिला। निम्न पुरानी हिन्दी फिल्मों के लोकगीत, आज भी अपनी यादों के साथ गुनगुनाने के लिए अपनी छाप छोड़ देते हैं। कुछ लोक गीत उदाहरण के लिए प्रस्तुत हैं—

— नैन लड़ि जैहैं तो मनवा में कसक हुइबे करी.
— नजर लागी राजा तोरे बंगले में.
— करवी बिकाइ हमें लाई दीजो लटकन.
— मैंने सपने में देखे भरतार.
— इकली धोरी वन में आइ श्याम तेने कैसी ठानी रे.
— रंग बरसे, भीगे चुंदरि वाली रंग बरसे. (हरिवंशराय बच्चन)

हिन्दी-भाषा को समझने और पढ़ने में जितना ध्यान प्रारम्भिक काल में दिया जाता था उतना शायद आज नहीं दिया जाता। जिसके कारण साहित्य और भाषा दोनों का स्तर सिमट रहा है। लोग शब्दों को ठीक से लिखने और उनका यथास्थान पर लिंग (Gender) के साथ प्रयोग करना मुश्किल होता जा रहा है। एक ही वाक्य में आधा-वाक्य पुलिंग है और आधा-वाक्य स्त्रीलिंग है जो हास्य में बम्बइया-भाषा की शैली कहा जाता है। जहां हिन्दी को मराठी या गुजराती भाषा के साथ जोड़कर उसे हास्यपद बनाया जाता है। जैसे- 'आने का है', 'जाने का है', 'खाने का है', आदि।

यहां इन वाक्यों में हिन्दी-भाषा की क्रिया (Verb) का स्वरूप बदल दिया गया है जिनका वास्तविक स्वरूप - आना है, जाना है, तथा खाना है। इसी प्रकार से कुछ अन्य हिन्दी शब्दों को देखें जिन्हें इस भाषा के जानकार भी लिखने में कभी कभी गल्ती करते हैं —

- अनेक = अनेकों (एक का बहुवचन अनेक है अतः 'अनेकों' गलत है)
- आशीर्वाद = आशीर्वाद ('र' श के बाद आता है अतः 'व' पर र आयेगा)

इस प्रकार से कई अन्य शब्द भी हैं जो गलत लिखने के प्रचलन में हैं —

- अन्तर्राष्ट्रीय = अन्तर्राष्ट्रीय ('र' त के बाद आता है अतः 'र' पर र आयेगा)
- हँसना = हंसना ('ह' पर चंद्रबिन्दु होगा न कि बिन्दी)
- हंस (पक्षी) = हँस ('हंस' पक्षी में 'ह' पर बिन्दी आयेगी न कि चंद्रबिन्दु)

इस प्रकार से कई ऐसे शब्द हैं जिनको लिखते समय ध्यान देना आवश्यक होता है किन्तु वर्तनी की यदि सही जानकारी है तो इन्हें ठीक से लिखा जा सकता है। वहीं सही उच्चारण भी इन गल्तियों को दूर करने में सहायक होता है। और अंत में, मेरा यह मानना है कि यदि शिक्षा संस्थाएं जो प्रारम्भिक या बेसिक रूप से शिक्षा देतीं हैं वह इन गल्तियों को प्रारम्भ से सुधार सकतीं हैं। इस प्रकार बहुत हद तक हिन्दी-भाषा या अन्य भाषाओं के दोष दूर किये जा सकते हैं। इसके साथ ही तकनीकी संस्थाओं का भी सहयोग आज आवश्यक हो गया है। क्योंकि भाषा और साहित्य की बहुत सारी जानकारी अन्तर्जाल पर उपलब्ध होती है जहां यदि गलत सूचना डाली जायेगी तो गलत पढ़ी जायेगी और परिणाम भी आगे के समय में गल्त ही आयेंगे। यही कारण है कि भाषा का प्रसार और खासकर हिन्दी-भाषा का प्रसार बढ़ा है किन्तु उसे रोमन-लिपि में लिखने के कारण उसमें व्याकरण की अशुद्धियां पनप रहीं हैं जिसे हिन्दी-भाषा के जानकार वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान रखने वाले इसे और शुद्ध एवं सार्थक बना सकते हैं।

रामबाबू गौतम 'आर्जी', न्यू जर्सी,
अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति
(शाखा अध्यक्ष - न्यू जर्सी)
Gautamrb93@yahoo.com

मार्च ६, २०१५.